# भगवान् श्रीसूर्यदेवकी उपासनासे विपत्तिसे छुटकारा

(जगद्गुरु शंकराचार्य ज्योतिष्पीठाधीश्वर ब्रह्मलीन पूज्यपाद स्वामी श्रीकृष्णबोधाश्रमजी महाराजका उद्बोधन)

## ( श्रीसूर्यसम्बन्धी सत्य घटना )

*[भारतके सुप्रसिद्ध महान् धर्माचार्य परमपूज्यपाद प्रातःस्मरणीय श्रीमज्जगद्गुरु शंकराचार्य ज्योतिष्पीठाधीश्वर अनन्तश्रीविभूषित ब्रह्मलीन स्वामी श्रीकृष्णबोधाश्रमजी महाराजके श्रीमुखसे सुनी भगवान् श्रीसूर्यसम्बन्धी सत्य घटना और सदुपदेश पाठकोंके लाभार्थ प्रेषकके (यथास्मृत) अनुसार यहाँ दिये जा रहे हैं।]*

**श्रीसूर्यकी उपासनाका अद्भुत चमत्कार—**

**जिज्ञासुका प्रश्न**—पूज्यपाद महाराजजी! मैं बड़ा दुःखी हूँ, मेरा दुःख दूर कैसे हो?

**पूज्य जगद्गुरुजी**—तुम किस जातिके हो?

**जिज्ञासु**—मैं जातिका ब्राह्मण हूँ।

**पूज्य जगद्गुरुजी**—तुम ब्राह्मण होकर दुःखी हो, बड़ा आश्चर्य है? तुम अपने स्वरूपको पहचानो और नित्यप्रति भगवान् श्रीसूर्यका भजन, पूजन, आराधन किया करो तथा भगवान् श्रीसूर्यके मन्त्रका जप करो। सूर्यकी उपासना करोगे तो तुम्हारे समस्त रोग-शोक, दुःख-दारिद्र्य इत्यादि सब तत्काल दूर हो जायँगे। भगवान् श्रीसूर्यकी उपासना करनेसे कौन-सा ऐसा कार्य है कि जो नहीं बन जाता? भगवान् श्रीसूर्यकी उपासना करनेसे और भगवान् श्रीसूर्यके प्रसन्न हो जानेसे मनुष्यके प्रायः सभी मनोरथ सिद्ध हो जाते हैं एवं सभी कार्य बन जाते हैं। भगवान् श्रीसूर्यकी महिमा बड़ी अद्भुत तथा विलक्षण है। भगवान् श्रीसूर्यकी उपासना करनेसे यह लोक और परलोक दोनों बन जाते हैं।

**जिज्ञासु**—महाराजजी! वास्तवमें भगवान् श्रीसूर्यकी उपासना करनेसे दुःखोंसे और रोग-शोकसे छुटकारा मिल जाता है, क्या यह बात सत्य है?

**पूज्य जगद्गुरुजी**—सत्य है और बिलकुल अक्षरशः सत्य है।

**जिज्ञासु**—महाराजजी! यह कैसे होता है, कृपाकर कुछ और समझाकर उपदेश करें।

**पूज्य जगद्गुरुजी**—इसे जरा ध्यानसे सुनो। एक समयकी बात है कि हम अपने आश्रम दण्डीवाड़ा मेरठमें ठहरे हुए थे। एक व्रजका ब्राह्मण हमारे पास आया। वह बड़ा

पढ़ा-लिखा विद्वान् था, परंतु न तो उसके पास धन था और न उसकी कहीं नौकरी ही लगी थी। वह बड़ा परेशान और दु:खी था। उसने हमसे कहा कि महाराज! मैं बड़ा दु:खी हूँ और जातिका ब्राह्मण हूँ। अंग्रेजीसे एम० ए० भी हूँ। पर न तो मेरे पास पैसा है और न मुझे कोई नौकरी ही मिल पाती है। इधर मैं रोगी भी रहता हूँ। जिससे मेरे सब रोग-शोक दूर हो जायँ अत: ऐसा कोई उपाय बतानेकी कृपा करें।

पूज्य जगद्गुरुजीने कहा—

'तुम व्रजवासी ब्राह्मण हो इसलिये हम तुम्हें एक ऐसा उपाय बताते हैं, जिससे तुम्हारे समस्त रोग-शोक दूर हो जायँगे और तुम्हारी समस्त मन:कामना सिद्ध हो जायगी। तुम सब प्रकारसे सुखी हो जाओगे।'

उस ब्राह्मणने कहा कि महाराज! बड़ी कृपा होगी।

इसपर हमने उससे कहा कि तुम हमारे स्थानपर ही ठहरो और भगवान् श्रीसूर्यकी शरण लो। भगवान् श्रीसूर्यकी उपासना करो। पंद्रह दिनोंतक नित्यप्रति शुद्ध जलसे स्नान करके भगवान् श्रीसूर्यके सामने खड़े होकर सूर्यभगवान्‌को जल दो। उन्हें हाथ जोड़कर साष्टाङ्ग प्रणाम करो और चन्दन-पुष्पादिसे नित्यप्रति श्रद्धा-भक्तिसहित उनकी पूजा किया करो। हम जो विधि बतायें, उसके अनुसार श्रीसूर्यमन्त्रका जप, सूर्यके स्तोत्रोंका पाठ और सूर्यके व्रत करो, तुम्हारे सब कार्य सिद्ध हो जायँगे। श्रीसूर्योपासनासे कौन-सा ऐसा कार्य है कि जो सिद्ध न हो जाता हो।

उस ब्राह्मणने हमारी बातका विश्वास कर सूर्योपासना करनेका दृढ़ निश्चय कर लिया। वह अंग्रेजी पढ़ा था और फैशनमें रहता था तथा उसके सिरपर चोटी नहीं थी एवं वह चाय भी पीता था। हमने सबसे पहले उसके बाल कटवाकर उसके सिरपर चोटी रखवायी और उससे चाय न पीनेकी प्रतिज्ञा करायी। फिर उसे श्रीसूर्यभगवान्‌के मन्त्र और स्तोत्र बताकर सूर्योपासना करानी प्रारम्भ करा दी।

उसने हमारे बताये अनुसार बड़ी लगन और बड़ी श्रद्धा-भक्तिके साथ भगवान् श्रीसूर्यकी उपासना, उनके मन्त्रका जप और स्तोत्रका पाठ आदि करना प्रारम्भ कर दिया। उसके विधिपूर्वक श्रीसूर्योपासना करनेका प्रत्यक्ष फल और अद्भुत चमत्कार यह देखनेमें आया कि अभी सूर्योपासना करते पंद्रह दिन भी पूरे नहीं हुए थे कि उसके घरसे एक तार आया कि तुम्हारी अमुक जगहकी नौकरी लगनेकी सूचना आयी है, इसलिये तुम तुरंत वहाँपर पहुँच जाओ और कार्य सँभाल लो। वह यह देखकर आश्चर्यचकित रह गया। उसकी भगवान् सूर्यमें और भी श्रद्धा-भक्ति हो गयी। वह वहाँ गया और ऊँचे पदपर नियुक्त हो गया। वह आगे जाकर मालामाल हो गया। इस प्रकार उसके सब रोग-शोक, दु:ख-दारिद्र्य समाप्त हो गये। यह सब भगवान् श्रीसूर्यदेवके भजन-पूजन, जप-अनुष्ठान आदि करनेसे और भगवान् श्रीसूर्यके प्रसन्न होनेसे ही हुआ, जो स्वयं हमारी प्रत्यक्ष आँखोंदेखी सत्य घटना है।

भगवान् श्रीसूर्यकी कृपासे सब कुछ प्राप्त हो सकता है। आवश्यकता है कि हम श्रद्धा-भक्तिके साथ विश्वासपूर्वक भगवान् श्रीसूर्यकी उपासना करें।

(प्रेषक—भक्त श्रीरामशरणदासजी)